100th Birth Anniversary of Arudra

Bhagavatula Sadasiva Sankara Sastri, better known by his pen name Arudra, made significant contributions to poetry, literary scholarship, cinema, dance research, and cultural preservation. He was a rare blend of creative brilliance and academic rigour.

Born on 31 August, 1925 in Visakhapatnam, Arudra hailed from a distinguished family whose history stretches back four centuries. His early years were shaped by traditional learning, but he broke away from convention early, rejecting caste-based practices and embracing a humanist worldview. His first poetic awakening came during the Japanese bombing of Visakhapatnam in World War II, which inspired Loha Vihangalu (Metal Birds). This powerful anti-war poem marked his literary debut.

Arudra's formative years were eclectic. He served in the Royal Indian Air Force, worked as a photographer, and eventually immersed himself in journalism and the Telugu film industry. His early literary mentors under whose influence Arudra honed his craft, blending modernist aesthetics with social commitment. Throughout his life, Arudra was a relentless learner, whether mastering chess, explore the depths of Telugu literary history and revived near-forgotten classical dance forms like Vilasini Natyam.

Arudra's magnum opus, Samagra Andhra Sahityam, remains the most comprehensive documentation of Telugu literary history to date. Originally spanning thirteen volumes, later condensed into four, it traces the evolution of Telugu literature from its origins to the modern era, making it a foundational reference for scholars and enthusiasts alike. His ability to weave historical rigour with engaging narrative ensured that this work became accessible beyond academia.

As a poet and lyricist, Arudra brought literary finesse to popular culture. He penned over 3,000 film songs, many of which became cultural staples, effortlessly blending poetic sophistication with mass appeal. His film lyrics, from devotional hymns to romantic duets, demonstrated his versatility and deep understanding of both classical and contemporary idioms. His landmark works include Tvamevaham, a searing poetic reflection on war and human suffering, and countless film songs that continue to resonate across generations.

Arudra was also a passionate researcher and revivalist of traditional arts. His scholarship on Vilasini Natyam, a classical dance form, played a pivotal role in its preservation and revival. His interdisciplinary approach-bridging literature, cinema, dance, and even magic, epitomised his belief that true art transcends rigid boundaries.

Arudra considered himself a Sangha Jeevi, a people's writer who believed that while epics live on paper, lyrics live in the hearts and voices of the people. This philosophy remains profoundly relevant today as India seeks to balance cultural preservation with modernisation. His works continue to be taught, performed, and discussed, bridging generations and inspiring new waves of Telugu writers, scholars, and artists

The centenary of Arudra's birth has reignited interest in his legacy and reaffirmed his pivotal role in Telugu and Indian cultural history. His vision of making literature accessible without diluting its essence continues to guide contemporary discourse on cultural inclusivity.

Arudra's towering contributions to Telugu literature, cinema, and cultural research make him a national figure of enduring significance. His centenary offers a timely and symbolic occasion to honour his legacy, ensuring that new generations across India recognise and celebrate his multifaceted genius.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp honouring a figure who seamlessly bridged the worlds of scholarly excellence and popular culture. He embodies the spirit of inclusivity, creativity, and intellectual rigour that defines India's literary tradition. This stamp not only celebrates Arudra's legacy but also highlights the enduring significance of Telugu literature in India's cultural fabric.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet :	:	Ms. Neetu Arora
Text:	:	Referenced from content provided by the Proponent

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
Department of Posts

अरूद्र की 100वीं जयंती



100th Birth Anniversary of Arudra

विवरणिका
BROCHURE

अरूद्र की 100वीं जयंती

भगवतुला सदाशिव शंकर शास्त्री अपने लेखकीय नाम अरुद्र से विख्यात हैं। उन्होंने काव्य, साहित्यिक विद्धता, सिनेमा, नृत्य शोध और सांस्कृतिक संरक्षण में उल्लेखनीय योगदान किया था। वे रचनात्मक प्रतिभा और अकादमिक दृढ़ता के एक दुर्लभ योग थे।

अरुद्र का जन्म विशाखापट्टनम में 31 अगस्त 1925 को हुआ। वे एक प्रतिष्ठित परिवार से थे, जिनका इतिहास चार सदियों पुराना है। पारंपरिक शिक्षा ने उनके आरंभिक वर्षों को आकार दिया, लेकिन शीघ्र ही उन्होंने परंपराओं से अपने आप को अलग कर लिया। जाति–आधारित प्रथाओं को अस्वीकार करते हुए उन्होंने मानवतावादी विश्वदृष्टि को अपनाया। उनमें पहली बार काव्यात्मक जागृति द्वितीय विश्व युद्ध में विशाखापट्टनम पर जापानी बमबारी के दौरान हुई, जिसने 'लोह विहंगलु (धातु के पक्षी)' काव्य–संग्रह लिखने के लिए प्रेरित किया। इस शक्तिशाली युद्ध–विरोधी कविता से उनका साहित्यिक जगत में पदार्पण हुआ।

अरुद्र के शुरुआती वर्ष विविधतापूर्ण थे। उन्होंने रॉयल इंडियन एयरफोर्स में सेवा प्रदान की, फोटोग्राफर के रूप में कार्य किया और अंततः पत्रकारिता और तेलुगू फिल्म उद्योग में स्वयं को समर्पित कर दिया। उनके शुरुआती साहित्यिक गुरुओं की प्रेरणा से उन्होंने आधुनिकतावादी सौंदर्यशास्त्र को सामाजिक प्रतिबद्धता के साथ सम्मिश्रण करते हुए अपनी शिल्पकला को निखारा। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन एक अनवरत शिक्षार्थी के रूप में व्यतीत किया – चाहे शतरंज में महारत हासिल करना हो, तेलुगू के साहित्यिक इतिहास की गहराईयों की खोज करना हो, या विलासिनी नाट्यम जैसी शास्त्रीय नृत्य की लगभग भुला दी गई शैली को पुनर्जीवित करना हो।

अरुद्र की महान कृति 'समग्र आंध्र साहित्य' अब तक के तेलुगू साहित्य के इतिहास का सबसे बृहद् दस्तावेज है। यह कृति मूल रूप से तेरह खंडों में थी, जिसे बाद में चार खंडों में संक्षिप्त किया गया। इसमें तेलुगू साहित्य के उद्भव से लेकर आधुनिक युग तक के विकास की जानकारी का उल्लेख किया गया है। इस वजह से यह विद्वानों और साहित्य के प्रति उत्सुक व्यक्तियों, दोनों के लिए एक आधारभूत संदर्भ ग्रंथ बन गया है। ऐतिहासिक बारीकियों को आकर्षक कथा के साथ जोड़ने की उनकी क्षमता ने इस कृति को अकादमिक जगत के दायरे से परे भी लोगों तक उसकी पहुंच को सुनिश्चित किया।

कवि एवं गीतकार के रूप में, अरुद्र लोकप्रिय संस्कृति में साहित्यिक उत्कृष्टता लेकर आए। उन्होंने 3,000 से अधिक फिल्मी गीत लिखे, जिनमें से कई सांस्कृतिक पहचान के रूप में लोकप्रिय हो गए। इन गीतों में काव्यात्मक संसारिकता के साथ जन आकर्षण का सहज रूप से मिश्रण था। भक्ति भजनों से लेकर रोमांटिक युगल गीतों तक के उनके फिल्मी गीतों में उनकी बहुमुखी प्रतिभा और शास्त्रीय व समकालीन दोनों मुहावरों की गहरी समझ की अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। उनकी युगांतरकारी कृतियों में 'त्वमेवहम्', युद्ध व मानवीय पीड़ा पर एक अत्यंत दुःखद और काव्यात्मक मनोभाव है और ऐसे अनगिनत फिल्मी गीत शामिल हैं, जो पीढ़ियों तक गुनगुनाए जाते रहेंगे।

अरुद्र पारंपरिक कलाओं के एक जुनूनी शोधकर्ता और पुनरुत्थानवादी भी थे। विलासिनी नाट्यम–शास्त्रीय नृत्य की एक शैली पर उनकी विद्वत्ता ने इसके संरक्षण और पुनरुद्धार में निर्णायक भूमिका निभाई। साहित्य, सिनेमा, नृत्य और यहां तक कि तिलिस्य जगत से युक्त उनका अंतःविषयक दृष्टिकोण इस विश्वास का प्रतीक था कि सच्ची कला सीमाओं को भी लांघ जाती है।

अरुद्र स्वयं को संघ जीवी मानते थे, ऐसा 'जन–लेखक' जिनका यह मानना था कि महाकाव्य कागज पर जीवित रहते हैं जबकि गीत लोगों के दिल और जुबान पर जिंदा रहते हैं। उनका यह दर्शन आज भी अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि भारत सांस्कृतिक संरक्षण और आधुनिकीकरण के बीच संतुलन बैठा रहा है। उनकी कृतियां अभी भी लगातार पढ़ायी जाती हैं, उनका मंचन किया जाता है और उन पर विचार–विमर्श किया जाता है, जिससे पीढ़ी–दर–पीढ़ी परस्पर जुड़ती हैं और तेलुगू लेखकों, शोधकर्ताओं एवं कलाकारों की नई पीढ़ी को प्रेरित करती हैं।

अरुद्र की जन्म शती ने, उनकी विरासत में रुचि को फिर से एक बार जगा दिया है, तथा तेलुगू और भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को एक बार फिर साबित किया है। साहित्य के सार को परिवर्तित किए बिना उसे सुलभ बनाने की उनकी दृष्टि, सांस्कृतिक समावेशिता पर समकालीन विमर्श का मार्गदर्शन करती है।

अरुद्र का तेलुगू साहित्य, सिनेमा और सांस्कृतिक शोध में असाधारण योगदान, उन्हें चिरस्थायी महत्व की एक राष्ट्रीय हस्ती का स्थान प्रदान करती है। उनकी जन्मसदी उनकी विरासत का सम्मान करने के लिए एक सामयिक और प्रतीकात्मक अवसर प्रदान करती है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि संपूर्ण भारत में नई पीढ़ियां उनकी बहुमुखी प्रतिभा को पहचानें और उनका यशगान करें।

डाक विभाग, एक ऐसे व्यक्तित्व के सम्मान में स्मारक डाक–टिकट जारी करने पर गर्व का अनुभव करता है, जिसने विद्धतापूर्ण उत्कृष्टता और लोकप्रिय संस्कृति के बीच सहजता से सेतु का काम किया। वे समावेशिता, रचनात्मकता और बौद्धिक दृढ़ता की भावना के प्रतीक हैं, जो भारत की साहित्यिक परंपरा को परिभाषित करते हैं। यह डाक–टिकट न केवल अरुद्र की विरासत का प्रतीक हैं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक ताने–बाने में तेलुगू साहित्य के स्थायी महत्व को भी रेखांकित करता है।

आभार :

डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/विरूपण कैशे	:	सुश्री नीतू अरोड़ा
पाठ	:	प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्य	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रित डाक टिकटें	:	303280
Stamps Printed	:	303280
मुदिण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamps, Miniature Sheets, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00